आपकी खुशी आपके पास

क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विज्ञापन के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता हुआ ''पीस ऑफ माइंड चैनल, आपके शहर में उपलब्ध है। Enquiry Mob. 8140211111 channel-697

'शांतिदूत युवा साईकिल यात्रा'

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के युवा प्रभाग द्वारा उज्जवल भारत के लिए 'शांतिदूत युवा साईकिल यात्रा' का अभियान भारत वर्ष के विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया गया है। जिसका शुभारंभ 13-सितम्बर-2013 को दिल्ली से किया जाएगा। यात्रा के दौरान विभिन्न स्थानों पर क्लब्स, यूथ एसोसिएशन, युनिवर्सिटीज़, कोर्पोरेट सेक्टर्स, आर्म्स फोर्स, पुलिस, सी.आर.पी.एफ, महिला सुधार गृह, बाल सुधार गृह तथा मजदूर संगठन आदि में आध्यात्मिक जागृति के कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

सूचना- ओमशान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने वाले भाइयों की आवश्यकता है। ईमेल, वेबसाइड तथा साफ्टवेयर की जानकारी रखने वाले भाई की भी आवश्यकता है। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें -

E-mail-
mediabkm@gmail.com,
Mob.-8107119445

सूचना

आप सभी भाई-बहनों की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन' नवीन संस्करण के साथ, भगवान कौन? की गीता का आध्यात्मिक रहस्य पुस्तक हैप्पीनेस इंडेक्स, कथा सरिता उपलब्ध है। इसे आप ओम शांति मीडिया, शांतिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

राज्यपाल डॉ.एम.चेन्ना रेड्डी, दादी प्रकाशमणि को 'डॉक्टर ऑफ लिट्रेचर' की उपाधि से सम्मानित करते हुए।

24 अक्तूबर, 1986 : यू.एन.ओ.महासचिव जेवियर पेरेज से शान्ति पुरस्कार प्राप्त करती दादी।

तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी दादी प्रकाशमणि से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए।

पांचों द्वीपों में ...

-पेज 12 का शेष

निदेशिका के रूप में दादी ने सैकड़ों कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए, जिससे लाखों आत्माओं को आध्यात्मिक रूप से लाभ मिला।

1964 में इन्हें महाराष्ट्र जोन की संचालिका और उसके बाद 1968 तक महाराष्ट्र, गुजरात व कर्नाटक जोन की प्रभारी के रूप में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

सन् 1969 मे संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपने देहावसान की पूर्व संध्या पर दादी जी की अदम्य साहस, निष्ठा, ईमानदारी तथा विश्व कल्याण की सेवाओं में समर्पणता को देखते हुए, अपना हाथ दादी जी के हाथ में देते हुए, अपनी सर्वशक्तियां हस्तांतरित कर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बागडोर सौंपी। तब से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक वह संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में कार्य करती रहीं।

अध्यात्म की ज्योति लेकर दादी जी ने देश ही नहीं विदेशों में भी प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता और राजयोग के सिद्धान्तों को लेकर, उच्च जीवन शैली के लिए सभी को प्रेरित किया। दादी जी के कुशल संचालन में ईश्वरीय विश्वविद्यालय में व्यक्तित्व निर्माण की आभा इतनी तीव्र हुई, जिसके फलस्वरूप आज देश-विदेशों में आठ हज़ार ब्रह्माकुमारी आध्यात्मिक सेवाकेन्द्र स्थापित हुए और हज़ारों भाई-बहनों ने अपना जीवन ईश्वरीय कार्य के लिए समर्पित किया।

दादी जी के नेतृत्व में, समाज में शान्ति, सद्भावना, धार्मिक समरसता, भ्रातृत्व प्रेम जैसे मूल्यों की स्थापना के कार्य को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को संयुक्त राष्ट्र संघ ने ग़ैर सरकारी संस्था के रूप में आर्थिक एवं सामाजिक परिषद की परामर्शक सदस्यता प्रदान की व युनिसेफ़ से जोड़ा

दादी के नेतृत्व में संस्थान द्वारा राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विराट रूप से चल रहे मानवीय कार्यों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को सन् 1985 में अन्तर्राष्ट्रीय 'शान्ति पदक' और दादी जी को सन् 1987 में सकारात्मक कार्यों के लिए 'शान्ति दूत सम्मान' से भी अभिनंदित किया। 5 राष्ट्रीय स्तर के भी शान्तिदूत पुरस्कार प्रदान किये। इसके अलावा, दादी जी को महामण्डलेश्वरों, सामाजिक संस्थानों, राज्य सरकारों ने विभिन्न पुरस्कार एवं सन्मान चिन्ह भेंट करते हुए उनकी सेवाओं की स्तुति की।

आध्यात्मिक शक्ति एवं बहुमुखी सेवाओं को देखते हुए, दादी प्रकाशमणि को 30 दिसम्बर, 1992 को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय द्वारा राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. एम.चेन्ना रेड्डी ने 'डाक्टरेट' की मानद उपाधि से विभूषित किया। उत्कृष्ट सामाजिक सेवाओं के लिए महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री शरद पवार ने उन्हें 'अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार-1994' भेंट किया।

दूरदृष्टा दादी जी ने राजयोग शिक्षा शोध संस्थान की स्थापना करते हुए विभिन्न वर्गों के सोलह प्रभागों का गठन किया। इनमें शिक्षाविद, युवा, मेडिकल, व्यवसाय, समाजसेवा, सांस्कृतिक, न्यायिक, प्रशासनिक, मीडिया आदि प्रभाग शामिल हैं। इनके अन्तर्गत अध्यात्म का समन्वय व शोध प्रारंभ हुआ। इसी के आधार पर संस्था अध्यात्म, प्राणी मात्र को समर्थ दिशा बोध देने में सक्षम बनी। ये प्रभाग अपने-अपने क्षेत्र में विश्व बन्धुत्व के बोध जगाने के लिए सक्रिय प्रयोग करते आ रहे हैं। ज्ञान-योग की तर्क संगत वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुति बुद्धिजीवियों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है। दादी जी विभिन्न जाति, वर्ण, रंग-भेद को दूर करने हेतु विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक आध्यात्मिक चेतना की अग्रदूत बनीं। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वास, व्यसन एवं तनाव से मुक्ति के लिए अनेक अभियान चलाए। युवाओं व महिलाओं के उत्थान, सर्वांगीण ग्राम विकास के लिए आध्यात्मिक चेतना जागृत करने वाले असंख्य कार्यक्रमों का संयोजन किया।

दादी जी की आध्यात्मिक प्रतिभा से प्रभावित, विभिन्न राज्यों के राज्यपालों, मुख्यमन्त्रियों और महामण्डलेश्वरों ने दादी जी को आमंत्रित करके उनके उद्बोधन से लाखों लोगों को लाभान्वित करवाया तथा उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। उनमें राजस्थान के राज्यपाल डॉ. एम.चेन्ना रेड्डी, महाराष्ट्र के राज्यपाल सी. सुब्रमणियम, आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री चन्द्रबाबू नायडू, दिल्ली के मुख्यमन्त्री साहिब सिंह वर्मा, उड़ीसा के मुख्यमन्त्री बीजू पटनायक, जानकी वल्लभ पटनायक, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल विरेन शाह आदि उल्लेखनीय हैं। महाराष्ट्र, आसाम, उड़ीसा, कर्नाटक, गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, छत्तीसगढ़ जैसे अनेक राज्यों में दादी जी को वरिष्ठ अतिथि के रूप में सम्मानित किया गया।

शिकागो में 'विश्व धर्म संसद' ने शताब्दी कार्यक्रम में मनोनीत अध्यक्षा के रूप में आमंत्रित कर, आशीर्वाद प्राप्त किया। सन् 2000 में जब दादी जी ईश्वरीय सेवार्थ अमेरिका गयीं, उस समय वाशिंगटन डी.सी. में स्टेट केपिटल बिल्डिंग के सामने मेयर ने दादी जी के करकमलों से वृक्षारोपण कर 'ओमशान्ति ट्री' नामांकित किया, साथ ही प्रतिवर्ष 10 जून को 'प्रकाशमणि दिवस' मनाने की उद्घोषणा की, जो आज भी यथावत् कायम है।

यूनेस्को ने दादी जी को अंतर्राष्ट्रीय शांति संस्कृति वर्ष के दौरान पीस मेनिफेस्टो 2000 के अंतर्गत भारत व 120 अन्य देशों से साढ़े तीन करोड़ व्यक्तियों के हस्ताक्षर जुटाने पर विशेष अवार्ड से सम्मानित किया। शान्ति एवं सद्भाव के संचार के लिए दादी जी के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय धर्मसम्मेलन का आयोजन शान्तिवन में विभिन्न तीर्थ स्थलों से निकाली गई यात्राओं के समापन पर किया गया। इसी प्रकार अन्य प्रदेशों में भी सर्व धर्म सम्मेलन, युवा सम्मेलन, नारी सम्मेलन एवं युवा यात्राओं का आयोजन उन्हीं की प्रेरणा का परिचायक था।

मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत दादी जी के निर्मल, पवित्र और प्रकाशदायी व्यक्तित्व से लाखों लोगों के जीवन में परिवर्तन आया। इनके सानिध्य में लाखों परिवार पवित्र, तनाव एवं व्यसनों से मुक्त, सुखी जीवन जीने की कला सीखकर अनेकों के लिए आदर्शमूर्त बने हैं। ऐसी आभामयी दादी को शत् शत् नमन।

नोबल पुरस्कार विजेता मदर टेरेसा के साथ आत्मियता से चर्चा करते हुए दादी जी।

नोबल पुरस्कार विजेता नेल्सन मंडेला को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुई दादी जी।

नेपाल के राजा विरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव, दादीजी को मोमेन्टो देते हुए।